

## बीजोपचार

मृदाजनित रोगों से बचाव हेतु बोने के पूर्व बीजों का किसी कवकरोधी (contact fungicide) से पूर्वोपचार करना चाहिए।

## बीज जीवितता

परिपक्व फलों से प्राप्त बीजों की जीवितता (viability) दो वर्ष से भी अधिक समय तक 90% बनी रहती है। तदुपरांत यह क्रमशः घटने लगती है।

## क्षेत्र तैयारी

खेत की अच्छी तरह जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बना लेना चाहिए। तदुपरांत मिट्टी में प्रति हेक्टेयर 10 से 20 टन गोबर खाद मिलाना चाहिए।

## बीज बुवाई

मानसून के ठीक पूर्व जून माह में उपचारित बीजों की बुवाई की जाती है। बुवाई अंतराल 1.0 X 0.75 मी. अथवा 1.0 X 0.6 मी. रखा जा सकता है।



## सवरखाव

बीजों में बुवाई के बाद 8 से 10 दिवस में अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है। धीरे-धीरे पूरा खेत केवांच की बेलों से भर जाता है। अच्छी वृद्धि तथा बीजोत्पादन के लिये बेलों को बाँस की खपच्चियाँ गाड़ कर सहारा देना चाहिए। खेत में प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन, सुपर फास्फेट तथा पोटैश रासायनिक उर्वरकों की क्रमशः 75, 50 तथा 50 कि.ग्रा. मात्रा दी जा सकती है। फॉस्फेट तथा पोटैश की पूरी मात्रा बुवाई के समय गोबर खाद के साथ दी जा सकती है। नाइट्रोजन उर्वरक को वर्षाकाल में 2 अथवा 3 बार में विभाजित खुराकों (split doses) के रूप में दिया जा सकता है। शुष्क मौसम में 15 दिवस के अंतराल पर तथा सर्दियों में फली तुड़ाई के दौरान माह में एक बार सिंचाई करनी चाहिए।

## रोग एवं कीट नियन्त्रण

कभी-कभी पौधे की बढ़त के प्रारम्भ में कॉलर सड़ांध रोग (collar rot disease) का प्रकोप पाया गया है जिसके लिये पौधों के कॉलर पर प्रति हेक्टेयर 2 कि.ग्रा. Trichorich (जो कि नीम खली में ट्राइकोडर्मा का फार्मुलेशन होता है) तथा 2 कि.ग्रा. Pseudomonas Fluorescens एवं 500 ग्राम गोबर खाद का मिश्रण लगाने से इस रोग की रोकथाम हो सकती है।

कीटों में पत्ती खाने वाले बालों वाले केंटरपिलर का प्रकोप पुष्पन के पूर्व पाया जाता है। इसकी रोकथाम के लिए 5 ग्राम प्रति लीटर के मान से नीम साबुन के घोल का छिड़काव करना चाहिए।

## विदोहन

बुवाई के लगभग 140 दिन बाद फलियाँ परिपक्व होने लगती हैं। उस समय फलियों का रंग धूसर – भूरे रंग का हो जाता है। तत्पश्चात् 20 – 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन बार फलियों की तुड़ाई की जा सकती है।

## विदोहनोत्तर प्रबंधन

तोड़ी गई फलियों को धूप में 4 – 7 दिन तक सुखाया जाता है। सूखे फलों को तोड़कर बीज निकाले जाते हैं। बीजों को पुनः छाया में सुखाते हैं, जब तक कि उनमें नमी 7 – 8% न रह जाये। सूखे बीजों को जूट के बोरों में भर कर उन्हें पॉलीथीन से ढंक दिया जाता है ताकि नमी से बचाव हो सके।

## ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई-चरक (ई-अंच) का उपयोग करें।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले-स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

## देशीय संचालक

देशीय-सह-सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर-482008 (म.प्र.)  
संपर्क : 0761-2665540, 9300481678, 9724658622, फैक्स : 0761-2661304  
ई-मेल : rfc\_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com  
वेब : http://www.rfccentral.org

Amrit # 8349634350

# केवांच

*Mucuna pruriens* (Linn.) DC Syn. *Mucuna prurita* Wight



देशीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा  
और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2020



## केवांच

*Mucuna pruriens* (Linn.) DC Syn. *Mucuna prurita* Wight

|                |  |
|----------------|--|
| उपकुल          | : Papilionaceae  |
| कुल            | : Fabaceae   |
| आयुर्वेदिक नाम | : कपिकाचु, आत्मगुप्त   |
| यूनानी नाम     | : कौंच   |
| हिन्दी नाम     | : कौंच, किवांच, गौन्का   |
| अंग्रेजी नाम   | : Velvet bean, Cowhage, Cowitch, Horse-eye bean, Mad bean, Devil bean, Lyon bean, Lacuna bean, Monkey tamarine |
| व्यापारिक नाम  | : कौंच बीज   |
| उपयोगी भाग     | : बीज, पत्तियाँ  |

### रासायनिक संरचना

केवांच बीज में 11 से 23 प्रतिशत अपरिष्कृत प्रोटीन तथा 35 से 40 प्रतिशत अपरिष्कृत फाइबर पाया जाता है। औषधीय उपयोग की दृष्टि से केवांच बीजों में पाये जाने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवयव L-dopa (3-4 dihydroxy phenylalanine) है। इसके अलावा अन्य पादप रसायनों में mucainain, serotonin, nicotine तथा bufotenine भी महत्वपूर्ण हैं। केवांच बीजों में दृष्टिम्रमकारी (hallucinogenic) ट्रिप्टामाइन्स, cyanogenic glucosides, oligosaccharides फीनोल्स, टैनिन्स, सैपोनिन्स, अल्कालॉयड्स, ल्यूटिन फाइटिक एसिड तथा फाइटेट्स भी पाये जाते हैं।



### गुण

केवांच की नई पत्तियों तथा फलियों के सम्पर्क में आने पर भयंकर खुजली होती है। ऐसा सेरोटोनिन एवं म्यूकुनाइन प्रोटीन की उपस्थिति के कारण होता है। केवांच में कामोद्दीपक, पार्किन्सनरोधी, मस्तिष्क रक्षक, एण्टीऑक्सीडेंट, नेमाटोड नाशक,

अलीलोपेथिक, मिर्गीरोधी, अर्बुदरोधी, मधुमेहरोधी, रोगाणुरोधी, विषरोधी, परजीवीरोधी, दर्दनाशक, सूजनरोधी, कैंसररोधी, वाइरसरोधी तथा रक्तचाप कम करने वाले गुण पाये जाते हैं।

### उपयोग

केवांच की फलियों तथा नवोद्भिद कल्लों को उबाल कर खाया जाता है। कुछ स्थानों पर इसकी फलियों को किण्वन (fermentation) करके भी खाया जाता है। इसकी पत्तियाँ मवेशियों के चारे के रूप में उपयोग में लाई जाती हैं। यह पौधा नत्रजन नियतन (nitrogen fixation) द्वारा जमीन की उर्वरता को भी बढ़ाता है। अतः मवेशियों के चारे तथा हरी खाद के लिए भी इसकी खेती की जाती है।

इसके बीजों को भून कर कॉफी के बीजों के स्थानापन्न के रूप में भी उपयोग किया जाता है। इसकी सूखी पत्तियाँ धूम्रपान हेतु भी उपयोग में लाई जाती हैं। विषाक्त रसायनों की उपस्थिति के कारण इसका उपयोग Imperata cylindrica नामक घास के जैविक नियन्त्रण (biological control) में भी किया जाता है। जहाँ तक इसके औषधीय उपयोग का प्रश्न है, आयुर्वेद तथा यूनानी चिकित्सा पद्धतियों में केवांच का कई रोगों के उपचार व नियन्त्रण में प्राचीन काल से उपयोग होता आ रहा है। कामोद्दीपक गुणों की उपस्थिति के कारण केवांच के बीजों का उपयोग पुरुषों की नपुंसकता दूर करने वाली तथा काम शक्तिवर्धक औषधियाँ बनाने में किया जाता है। इसमें L-dopa काफी मात्रा में (शुष्क भार का 3 से 7%) पाया जाता है, जिसके कारण इसका पार्किन्सन रोग के उपचार हेतु बनाई जाने वाली औषधियों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। इसका काढ़ा आमवात संबंधी रोगों के उपचार में उपयोगी पाया गया है। सर्पदंश के उपचार में भी केवांच का उपयोग किया जाता है।

### वितरण

यह पौधा प्राकृतिक रूप से अफ्रीका के कई देशों, पूर्वी तथा मध्य भारत एवं दक्षिणी चीन में पाया जाता है। एशिया, अमेरिका, अफ्रीका तथा प्रशांत महासागर के कई द्वीपों में इसकी खेती की जाती है।



### आकारिकी

यह एक उष्ण कटिबंधीय वार्षिक लता रूपी झाड़ी है। इसकी शाखायें पतली, 15 मीटर तक लम्बी हो सकती हैं। प्रारम्भ में यह पौधा लगभग पूरी तरह रोमयुक्त होता है परन्तु बाद में यह लगभग पूर्णतया रोममुक्त हो जाता है। इसकी पत्तियाँ एकान्तर क्रम में व्यवस्थित, अण्डाकार, सिरों पर भाले जैसी नुकीली होती हैं। नई पत्तियाँ दोनों तरफ रोमिल होती हैं। पत्तियों के किनारों पर गहरी नालियाँ (grooves) होती हैं। पत्तियों के डंठल 2 – 3 मि.मी. लम्बे होते हैं। इसके पुष्प सफेद अथवा बैंगनी रंग के होते हैं जो रोपण के 120 – 125 दिन के पश्चात आने लगते हैं। इसका बाह्यदलपुंज तितली के आकार का होता है। इसके फूल 15 – 32 से. मी. लम्बे अक्षीय पुष्प गुच्छों (axillary arrayed panicles) में लगे होते हैं। एक पुष्प गुच्छ में दो, तीन अथवा कई पुष्प हो सकते हैं। इसमें रोपण के 180 – 200 दिन बाद फल आने लगते हैं। फल 4 – 13 से.मी. लम्बे, 1–2 से.मी. चौड़े तथा पीले, नारंगी रंग के रोमों से ढंके होते हैं। फली पर लम्बाई में लकीर (ridge) होती है। एक फली में 4 से 6 बीज हो सकते हैं। बीज चमकीले काले, भूरे अथवा धब्बेदार सफेद रंग के, एक जैसे दीर्घवृत्ताकार, 1.0 – 1.3 से.मी. लम्बे, 0.8 – 1.3 से.मी. चौड़े तथा 4.0 – 5.5 से.मी. मोटे तथा घने रोमयुक्त होते हैं। 100 ग्राम बीजों का शुष्क भार 55 से 85 ग्राम के बीच होता है।

### जलवायु तथा मृदा

केवांच का पौधा विविध प्रकार की जलवायु तथा लगभग सभी प्रकार की मृदाओं, यहाँ तक कि कम उपजाऊ तथा उच्च अम्लता वाली मृदाओं में भी पनप सकता है परन्तु 5.5 से 7.5 पी.एच.मान वाली, अच्छी जल निकासी वाली रेतीली दोमट मिट्टी इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। यह गर्म तथा आर्द्र जलवायु अधिक पसंद करता है तथा ठंडी जलवायु में इसकी बढ़त कम हो जाती है। सर्दियों में न्यूनतम 15° से तथा गर्मियों में अधिकतम 38° से. तापमान तथा भरपूर वर्षा वाले समुद्रतल से अधिकतम 1500 मी. ऊँचाई पर स्थित उष्ण कटिबंधीय अथवा उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में इसकी खेती के लिए बहुत उपयुक्त है। यह पौधा आंशिक सूखे के प्रति सहनशील परन्तु पाले के प्रति संवेदनशील है।

### कृषि तकनीक

**प्रवर्धन सामग्री:** बीज

### नर्सरी तकनीक

केवांच के बीजों की सीधे खेत में बुवाई की जा सकती है। अतः नर्सरी में इसके पौधे तैयार करने की आवश्यकता नहीं है।